पिंजड़े से निकलते शेर की दहाड़

आर्थिक सुधारों के 20 साल

वर्ष 1991 में जब देश अत्यंत बदहाली के दौर से गुजर रहा था, विदेशी कर्ज चुकाने के लिए देश को अपना सोना तक गिरवी रखना पड़ा था, तब आर्थिक सुधार लागू किए गए थे। पिछले बीस वर्षों में गंगा-यमुना में बहुत पानी बह चुका है। इस बीच देश ने बहुत तरक्की की है। देश एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरा है। लेकिन फिर भी कुछ कमियां हैं। प्रस्तुत है एक आकलन:

हरिकिशन शर्मा

जैसा कि विक्टर ह्यूगो ने कहा है- दुनिया की कोई भी ताकत उस विचार को नहीं रोक सकती, जिसका वक्त आ चुका है- तो मैं सदन से कहता हूं कि आर्थिक शक्ति के रूप में भारत का उदय भी ऐसा ही एक विचार है। पूरी दुनिया साफ सुन ले। भारत अब जाग चुका है, हमें बढ़ना होगा, जीतना होगा।'

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने बतौर वित्तमंत्री 24 जुलाई, 1991 को अपने बजट भाषण का समापन जब इन शब्दों के साथ किया तो शायद किसी ने सोचा नहीं होगा कि सोना गिरवी रखने को मजबूर और भुगतान संकट के चलते दिवालियेपन की कगार पर पहुंचा मुल्क 21वीं सदी के उगते सूरज के संग आसमान में विश्व की दूसरी तेजी से उभरती आर्थिक ताकत बनकर छा जाएगा। और जब विकसित और धनाढ्य अर्थव्यवस्थाएं वित्तीय सुनामी से ताश के पत्तों की तरह ढेर होंगी तो वैश्विक अर्थव्यवस्था के चिराग को वह मंदी के थपेड़े से बचाएगा।

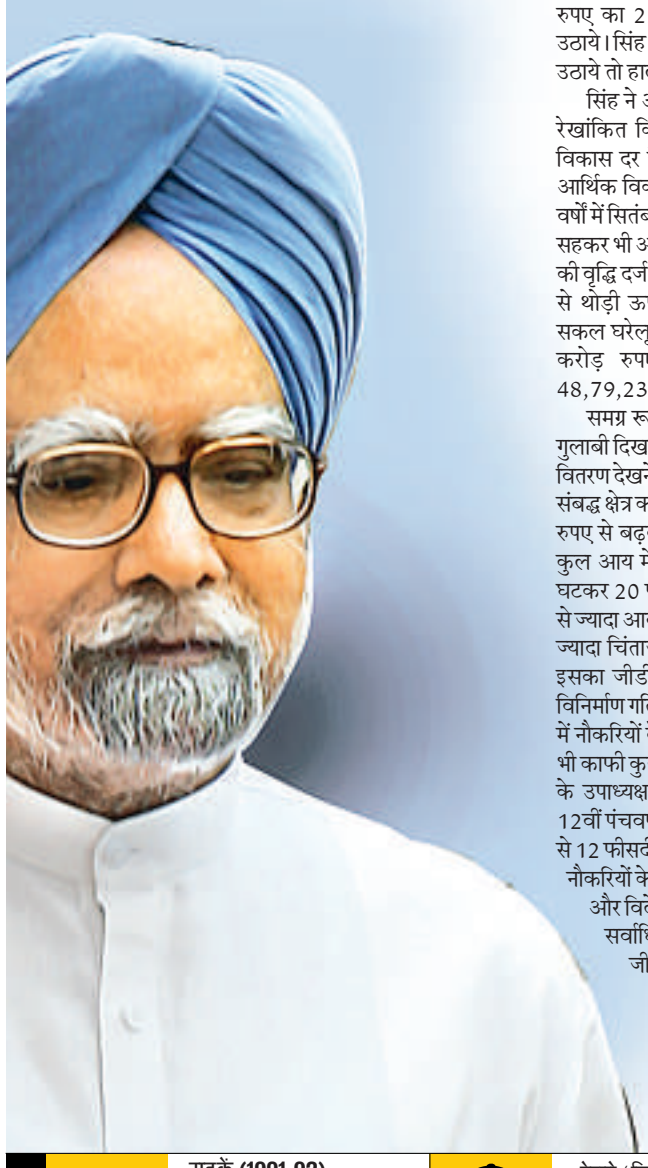

लोकसभा में अपना पहला बजट पेश करने उठे सिंह ने 1991 की गर्मियों में देश का हाल इन शब्दों में बयां किया था, 'अर्थव्यवस्था पर गहरा और चिंताजनक संकट है। आजाद भारत के इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ। हमारे पास महज 25,000 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा है, जिससे बमुश्किल एक पखवाड़े भर का सामान आयात हो सकता है।'

तब पश्चिमी मीडिया ने भारत को 'पिंजरे में बंद शेर' कहा था, जो भ्रष्टाचार और संरक्षणवाद की गिरफ्त में था। तब वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने उदारीकरण और भूमंडलीकरण की राह पर बढ़ते हुए चरणबद्ध ढंग से सब्सिडी बोझ और राजकोषीय घाटे को कम करने, कई घरेलू उद्योगों के द्वार विदेशी निवेश के लिए खोलने तथा रुपए का 22 फीसदी अवमूल्यन करने जैसे कदम उठाये। सिंह ने कहा, 'अब अगर निर्णायक कदम नहीं उठाये तो हालात बेकाबू हो जाएंगे।'

सिंह ने अपने भाषण में सुधारों के तीन अहम लक्ष्य रेखांकित किए। पहला लक्ष्य, सतत उच्च आर्थिक विकास दर है। निश्चित तौर पर बीते दो दशक उच्च आर्थिक विकास दर वाले रहे हैं, खासकर पिछले पांच वर्षों में सितंबर 2008 की वैश्विक मंदी के बाहरी झटके सहकर भी अर्थव्यवस्था ने सालाना लगभग आठ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। चालू वित्त वर्ष में भी वृद्धि दर 8 प्रतिशत से थोड़ी ऊपर रहने का अनुमान है। 1990-91 में सकल घरेलू उत्पाद (स्थिर मूल्यों पर) 10,83,572 करोड़ रुपए था, जो 2010-11 में बढ़ कर 48,79,233 करोड़ रुपए हो गया है।

समग्र रूप में आर्थिक विकास की तस्वीर बिल्कुल गुलाबी दिखती है, लेकिन अलग-अलग क्षेत्रों में इसका वितरण देखने पर कुछ सवाल उठते हैं। मसलन कृषि और संबद्ध क्षेत्र का जीडीपी इस अवधि में 3,33,356 करोड़ रुपए से बढ़कर महज 6,92,499 करोड़ रुपए हुआ। कुल आय में उसका हिस्सा भी लगभग एक तिहाई से घटकर 20 फीसदी रह गया है। अब भी कृषि पर आधी से ज्यादा आबादी की आजीविका टिकी है, लेकिन सबसे ज्यादा चिंताजनक बात यह है कि पिछले कुछ वर्षों में इसका जीडीपी बिल्कुल ठहर सा गया है। सुधारों ने विनिर्माण गतिविधियों को गति प्रदान की, लेकिन इस क्षेत्र में नौकरियों के अवसर बढ़ने के हिसाब से देखें तो अब भी काफी कुछ किए जाने की जरूरत है। योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया के मुताबिक 12वीं पंचवर्षीय योजना में विनिर्माण क्षेत्र में सालाना 11 से 12 फीसदी की वृद्धि दर हासिल कर हर साल 20 लाख नौकरियों के सृजन का लक्ष्य है। लाइसेंस राज खत्म होने और विदेशी पूंजी तथा प्रौद्योगिकी के मुक्त प्रवाह का सर्वाधिक लाभ सेवा क्षेत्र को मिला है, जिसका जीडीपी में योगदान बढ़कर लगभग 55 फीसदी से अधिक हो गया है। हाल के वर्षों में इसकी वृद्धि की रफ्तार भी औसतन दहाई के अंक में रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय कंपनियों ने दुनियाभर में परचम लहराया है।

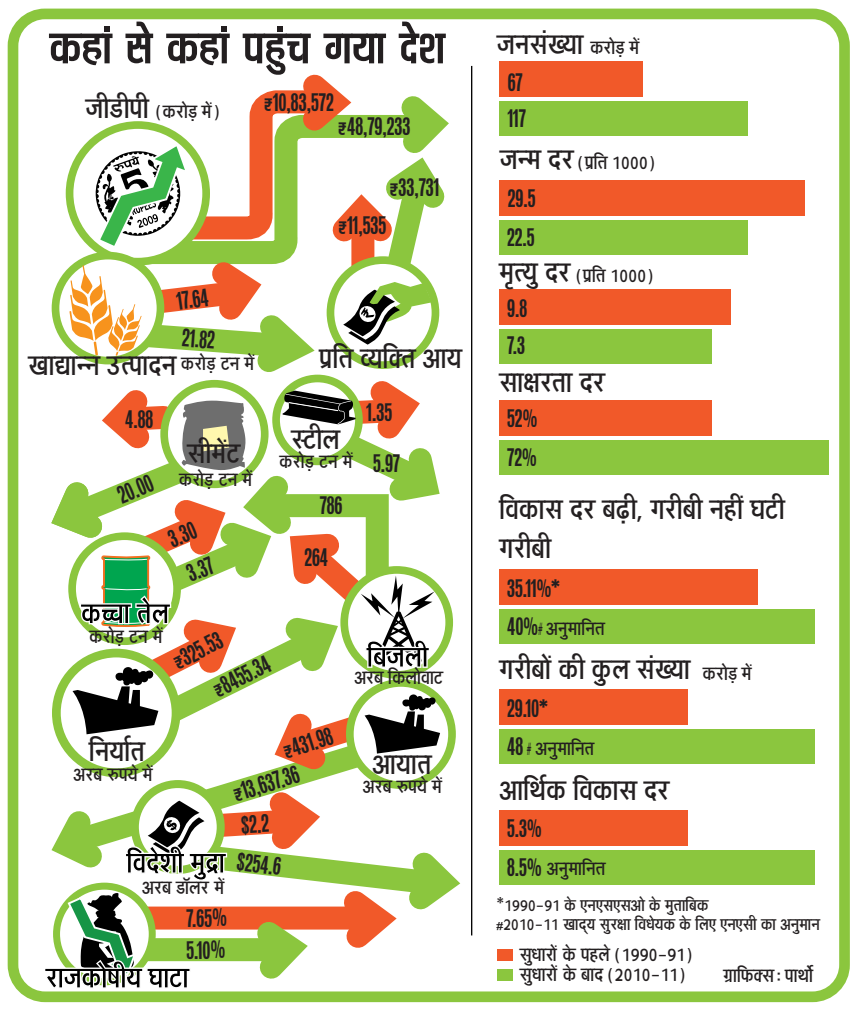

इस क्षेत्र में नौकरियों के नए कीर्तिमान बने हैं। आज कॉलेज से निकलने वाला छात्र अगले ही दिन अच्छी-खासी नौकरी पा सकता है।

सुधारों का दूसरा लक्ष्य उन्होंने रखा था मुद्रास्फीति पर काबू पाना। महंगाई से आज आम आदमी उसी तरह त्रस्त है, जैसे उस समय था। उसके बढ़ने की रफ्तार अब भी डबल डिजिट में है, खासकर बुनियादी वस्तुओं और खाद्य पदार्थों की कीमतें काबू से बाहर हैं।

1990-91 में (एनएसएसओ 46वां चक्र) कुल आबादी में से 35.11 प्रतिशत लोग गरीब थे, आज भी इनकी तादाद लगभग 50 करोड़ है। बहरहाल दो दशक के इस सफर में कई खट्टे-मीठे अनुभव रहे हैं, कई भ्रम, वर्जनाएं और परंपराएं टूटी हैं और नए सच सामने आए हैं। सुधारों ने लाइसेंस राज तो खत्म कर दिया, लेकिन भ्रष्टाचार की विषबेल नए रूप में, अलग-अलग क्षेत्रों में पैर पसारने लगी। यहां तक कि भारतीय पूंजीवाद को

"अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर को बढ़ाने की कोशिशें 80 के दशक में ही शुरू हो गयी थीं। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उस समय सरकारी नियंत्रण को कम करना शुरू किया था। 1991 में वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने उदारीकरण और निजीकरण के मार्ग पर चलकर इस सुधार प्रक्रिया को गति दी। आर्थिक विकास दर दशक दर दशक तेजी से बढ़ रही है। जहां तक सुधारों और गरीबी का रिश्ता है तो तेंदुलकर मेथड के आधार पर देखने पर गरीबी का प्रतिशत कम हुआ है, हालांकि गरीबों की कुल संख्या में वांछित कमी नहीं आयी है।"

अरूण मायरा, सदस्य, योजना आयोग

तीसरा लक्ष्य समतामूलक विकास था। लेकिन बीते दो दशकों में अमीरी भी बढ़ी है, पर 'हैव्स और हैव्स नॉट' के बीच फासला बढ़ा है। यह फासला आमदनी के साथ-साथ उपभोग के मामले में भी है। नेशनल सैंपल सर्वे संगठन (एनएसएसओ) के 2009-10 के पारिवारिक उपभोग व्यय संबंधी आंकड़ों से इसकी पुष्टि होती है। जहां तक गरीबी घटने का सवाल है तो सुधारों के बाद न तो गरीबों की संख्या घटी और न गरीबी का प्रतिशत। 'क्रोनी कैपिटलिज्म' (छद्म पूंजीवाद) तक कहा जाने लगा। बहरहाल बीते दो दशक खुशहाली और आर्थिक समृद्धि के गवाह भी बने। करोड़ों हाथों ने गाड़ी की चाबी थामी, करोड़ों परिवार मकान के मालिक बने, पहली बार इतनी बड़ी संख्या में लोग बैंकिंग सिस्टम से जुड़े और अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी आर्थिक ताकत के रूप में भारत की धाक बनी। तमाम बाधाओं के बावजूद भी 'पिंजड़े में बंद शेर' अब बाहर निकल कर दहाड़ लगा रहा है।

तब	सड़कें (1991-92) कुल लंबाई: 22,96,800 किमी नेशनल हाईवे: 33,690 किमी (1989-90) स्टेट हाईवे: उपलब्ध नहीं	रेलवे (किलोमीटर में) 1991-92 कुल लंबाई: 62,571 विद्युतीकृत लाइन: 10809	रजिस्टर्ड वाहनों की संख्या: 1990 मार्च कार, जीप और टैक्सी: 27,33,000 दोपहिया वाहन: 1,25,25,000	1990-91 की स्थिति कुल टेलीफोन कनेक्शंस: 50 लाख	कुल बेरोजगार- 9.02 मिलियन (1993-94) कुल बेरोजगार- 10.51 मिलियन
अब	कुल लंबाई: 33.40 लाख किलोमीटर नेशनल हाईवे: 65,569 किमी स्टेट हाईवे: 1,30,000 किमी	कुल लंबाई: 64,215 किमी विद्युतीकृत लाइन: 17,811 किमी	वाहनों की संख्या: 2008 कार, जीप और टैक्सी: 1,42,22,000 दो पहिया वाहन: 7,75,28,000	दिसंबर 2010 की स्थिति कुल फोन: 6212.80 लाख, वायरलाइन: 369.57 लाख, वायरलेस: 5843.23 लाख	(2004-05) कुल बेरोजगार- 16.00 मिलियन (2010-11) अनुमानित

एक्सपर्ट कॉर्नर

पहले की अपेक्षा अवसरों की संख्या काफी बढ़ी है

सुब्रत के मंडल
वरिष्ठ अर्थशास्त्री

सुधारों की प्रक्रिया से जीवन शैली में बदलाव आया है, खासकर शहरी क्षेत्रों में। आज शहरी मध्यम वर्ग और उच्च मध्यम वर्ग के पास उपभोक्ता वस्तुओं की विविधता मौजूद है, नौकरी के तमाम अवसर हैं, पढ़ाई के नये रास्ते खुले हैं, इंजीनियरिंग, मेडिकल और प्रबंधन में पढ़ाई कर नौजवान कार्पोरेट वर्ल्ड में नये मुकाम हासिल कर रहे हैं। भारतीय कंपनियों का साम्राज्य भी कई महाद्वीपों में फैला है। निस्संदेह अवसरों की संख्या पहले की अपेक्षा काफी बढ़ी है। अत्याधुनिक परिवहन व्यवस्था के साथ-साथ बिजली, पानी और सड़क की सुविधाओं का विस्तार अब छोटे शहरों में भी हो रहा है। पहले जहां यह काम सिर्फ सरकारी एजेंसियों के जिम्मे होता था, अब इसमें निजी क्षेत्र की भागीदारी भी बढ़ गयी है। यह आयात से बाधाएं हटने का ही असर है कि आज विदेशी ब्रांड की कोई भी कार, घड़ी, मोबाइल या कंप्यूटर आप आसानी से अपने पड़ोस के शोरूम में जाकर खरीद सकते हैं। हालांकि यह बात जरूर है कि उच्च आर्थिक विकास का असर जितनी तेजी से शहरों में हुआ है, उसके मुकाबले गांवों में पहुंचने की उसकी रफ्तार थोड़ी कम है। फिर भी सरकार प्रायोजित कार्यक्रमों की बदौलत वहां भी खुशहाली की नयी बयार बही है। इसमें सबसे बड़ा योगदान मनरेगा का है, जिस पर सरकार हर साल लगभग 40,000 करोड़ रुपये खर्च कर रही है। इन सबके बावजूद एक अहम चिंता है व्यापक स्तर पर फैली गरीबी। सुधार पूर्व काल में नियोजित विकास का मॉडल लागू करते वक्त कहा गया था कि ट्रिकिल डाउन प्रभाव से ऊपर आयी समृद्धि रिस कर निचले स्तर पर पहुंचेगी और गरीबी दूर हो जायेगी। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं हुआ।

कुछ क्षेत्रों में सुधार की जरूरत

पार्थ जे शाह, अध्यक्ष, सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी, नई दिल्ली

भारत में 1966 में भी वैसा ही संकट आया था, जैसा कि 1991 में। लेकिन उस समय सरकार ने सुधारों का रास्ता चुनने की बजाय सरकारी नियंत्रण का विकल्प चुना। यह आर्थिक सुधारों का ही परिणाम है कि वैश्विक आर्थिक फोरम जैसे मंच पर आज भारत की चर्चा होती है। इसके अलावा आज अमेरिका सहित तमाम मुल्क संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन कर रहे हैं। लेकिन अब भी कई क्षेत्र ऐसे हैं, जहां सुधारों का आगाज होना बाकी है। मसलन कृषि जहां पिछले 20 साल में सरकार ने सुधारों के लिए कोई कदम नहीं उठाया। ऐसे ही शहरी क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र तथा वनों में रहने वाले आदिवासियों के लिए भी सुधारों में कोई स्थान नहीं रहा है। 1991 में हुए सुधारों का मुख्य जोर औद्योगिक व संगठित क्षेत्र के सुधारों पर बल दिया गया था, लेकिन अब इन क्षेत्रों में भी सुधार शुरू करने की जरूरत है।

जरूर लॉग इन करें

आज की दो टॉप वेबसाइट

iegindia.org/

यह आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में भारत के अग्रणी संस्थान 'इकोनॉमिक ग्रोथ इंस्टीट्यूट' की आधिकारिक वेबसाइट है। इस वेबसाइट पर नौ महत्त्वपूर्ण आर्थिक-सामाजिक क्षेत्रों- कृषि व ग्रामीण विकास; वैश्वीकरण व व्यापार; उद्योग, श्रम व कल्याण; स्वास्थ्य नीति और सामाजिक परिवर्तन आदि से जुड़े शोधों के बारे में जानकारी हासिल की जा सकती है। इसके अलावा आप यहां संस्थान द्वारा आयोजित किए जाने प्रशिक्षण कार्यक्रमों व फेलोशिप की भी जानकारी हासिल कर सकते हैं। यहां संस्थान की गतिविधियों के संबंध में भी सूचनाएं उपलब्ध हैं।

indiastat.com

इस वेबसाइट पर भारत और इसके विभिन्न राज्यों से संबंधित सामाजिक-आर्थिक जानकारियों का विपुल भंडार है। यह वेबसाइट एकेडेमिक प्रोफेशनलों, शोध विद्यार्थियों और कॉरपोरेट जगत के लिए काफी उपयोगी है। आप यहां कृषि, बैंक व वित्तीय संस्थानों, अपराध व कानून, शिक्षा, अर्थ जगत, डेमोग्राफी, वन व पर्यावरण, निर्वाचन संबंधी, स्वास्थ्य, उद्योग, बीमा आदि से जुड़े महत्त्वपूर्ण आंकड़े हासिल कर सकते हैं। इस वेबसाइट पर कुछ सूचनाएं तो मुफ्त में उपलब्ध हैं, लेकिन कई आंकड़ों के लिए शुल्क भी देना पड़ता है।

रोजनामचा

जरूर देखें

प्रात:10.35 खुल्लम खुल्ला प्यार करें, दोपहर 2.15 दिलवाले, शाम 6.00 विनाशक, रात 9.00 कुरुक्षेत्र

प्रात: 11.00 नसीब अपना अपना, दोपहर 2.30 कहर, शाम 6.00 जानी दुश्मन, रात 9.00 जर्नी बॉम्बे टू गोवा

रात 8.00 बालिका वधू, 8.30 लागी तुझसे लगन, 9.00 फुलवा, 9.30 मुक्ति बंधन, 10.00 उतरन, 10.30 लाडो

प्रात: 9.00 माई नेम इज एंथनी गोन्सालविस, दोपहर 12.30 तमाचा, शाम 4.00 मवाली, रात 8.00 अब तक छप्पन

प्रात: 11.30 लव बाइट्स, दोपहर 2.00 डॉन, शाम 6.30 रेड हॉट काउंटडाउन, रात 8.30 लेट्स गो, 10.00 बी-टूनाइट

प्रात: 8.30 साजन चले ससुराल, दोपहर 12.00 जिस देश में गंगा रहता है, रात 8.00 मुन्नाभाई एमबीबीएस

प्रात: 10.30 सोहनी महिवाल, दोपहर 12.00 कसक, शाम 7.30 अर्थ मैटर्स, रात 9.30 झूमे नाचे गाएं, 11.00 रंगोली

शाम 7.00 छोटी सी जिंदगी, 7.30 छोटी बहू, रात 8.00 शोभा सोमनाथ की, 8.30 मैं घर घर खेली, 9.00 पवित्र रिश्ता

प्रात: 8.30 सदा सुहागन, दोपहर 12.00 आंटी नं 1, शाम 4.00 आज का शिवा, रात 8.00 कहीं प्यार ना हो जाए

रात 8.00 इस प्यार को क्या नाम दूं, 8.30 मायके से बंधी डोर, 9.00 गुलाल, 11.00 मर्यादा, 11.30 जस्ट डांस

'फिल्मी' पर देखें 'अब तक छप्पन'

दोपहर 2.00 माई शॉकिंग स्टोरी, शाम 4.00 प्लैनेट अर्थ: द फ्यूचर, 7.30 फीस्ट इंडिया, रात 10.00 डुएल सरवाइवल

प्रात: 10.00 हियर वी ड्रैगंस, दोपहर 2.00 फूल्ड बाई नेचर, शाम 5.00 साउथ पैसिफिक, रात 10.00 यलोस्टोन

शाम 6.00 ग्रेट माइग्रेशंस, रात 8.30 मैड लैब्स, 9.00 एक्स्ट्राऑर्डिनरी डॉग्स, 11.00 नेट जिओ इनवेस्टिगेट्स

आज का भविष्य

प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

मेष: व्यावसायिक गतिविधियों में कुछ अड़चनें आ सकती हैं। काबू करने में अभी कुछ समय लगेगा।

वृष: काम-धंधे के लिए समय अनुकूल है। संतान की प्रगति का योग बन रहा है।

मिथुन: मानसिक उधेड़बुन के बावजूद आप काम-धंधे में व्यस्त रहेंगे। अधिक जिम्मेदारी न उठाएं।

कर्क: आस-पास घूमने-फिरने का कार्यक्रम बन सकता है। सामाजिक क्षेत्र में संबंधों का विस्तार होगा।

सिंह: सोच-विचारों में उलझे रहने से काम-धंधे में पूरा मन नहीं लगेगा। पिछले परिश्रम का कुछ लाभ होगा।

कन्या: इष्ट मित्रों एवं सहयोगियों के सकारात्मक रुख से मनोबल उन्नत होगा। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी।

तुला: आज प्रचलित कामों में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। लगातार कोशिश करने से कुछ सुधार होगा।

वृश्चिक: नए लोगों से सम्पर्क होगा, जो भविष्य में लाभ देगा। छात्रों एवं युवाओं के लिए समय अनुकूल है।

धनु: परिवार के लोगों के साथ अकारण खींचतान हो सकती है। महिलाएं धीरज से काम लें।

मकर: मित्र एवं परिचितों के झगड़े-झंझटों से दूर रहें। दूसरों के फटे में पैर डालने से आपको परेशानी होगी।

कुंभ: मन में उत्साह एवं विश्वास का संचार होगा। बुजुर्गों एवं गुरुजनों का सहयोग एवं आशीर्वाद मिलेगा।

मीन: समय धीरे-धीरे सुधर रहा है। छात्रों व युवाओं को प्रगति के अवसर मिलेंगे।

व्रत और त्योहार

पंचांग

पंचक चालू है। सूर्य दक्षिणायन। सूर्य उत्तर गोल। वर्षा ऋतु। मध्याह्न एक बजकर 30 मिनट से सायं 3 बजे तक राहुकालम्।

सूर्य कर्क राशि में, चंद्रमा मीन राशि में, बुध सिंह राशि में, शुक्र मिथुन राशि में, मंगल वृष राशि में, वृहस्पति मेष राशि में, शनि कन्या राशि में, राहु वृश्चिक राशि में, केतु वृष राशि में।

21 जुलाई वृहस्पतिवार, 30 आषाढ़ (सौर) शक 1933, श्रावण मास 21 प्रविष्टे 2068, 19 शाबान सन हिजरी 1432, श्रावण कृष्ण षष्ठी सायं 6 बज कर 59 मिनट तक उपरांत सप्तमी, उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र सायं 7 बज कर 27 मिनट तक तदनंतर रेवती नक्षत्र, अतिगण्ड योग सायं 5 बज कर 21 मिनट तक पश्चात सुकर्मा योग, गर करण, चन्द्रमा मीन राशि में (दिन-रात)।

पं. वेणी माधव गोस्वामी

लतीफे

पत्नी- आप जब चश्मा उतार देते हैं, तब बहुत हैंडसम दिखते हैं।
पति- हां डियर, मैं जब चश्मा उतार देता हूं, तब तुम भी बहुत खूबसूरत दिखती हो।

* * *

मोहन- यार मेरी पत्नी ने कल मुझसे झूठ बोला, वो कल शाम देर से लौटी थी और मेरे पूछने पर बताया कि वह अपनी सहेली के साथ कहीं बाहर गई थी।
सोहन- तुम्हें कैसे पता चला कि वह झूठ बोल रही थी?
मोहन- अरे, कल मैं उस समय उसकी उसी सहेली के साथ फिल्म देखने गया था।

गुस्ताखी माफ

पवन

सुडोकू 2035

		6			2	8	3	
5				7				1
9	8	4		6			5	
	5	2		4	9			
6			1		7			3
			6	3		9	8	
	4			1		7	6	8
8				5				9
	3	9	2			4		

बहुत आसान ★

7	4	5	1	2	3	9	6	8
6	3	9	5	4	8	7	1	2
2	1	8	6	9	7	3	4	5
5	9	2	8	1	4	6	3	7
3	6	7	2	5	9	4	8	1
4	8	1	7	3	6	5	2	9
8	2	6	4	7	5	1	9	3
9	7	4	3	8	1	2	5	6
1	5	3	9	6	2	8	7	4

खेलने का तरीका दिमागी खेल और नम्बरों की पहेली। तर्क के सहारे आप इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने या बक्से दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

© पैराकॉक की पहेलियां। हल के संकेत और कम्प्यूटर प्रोग्राम के लिए www.sudoku.com

हल: सूडोकू नं. 2034

वर्ग पहेली 2949

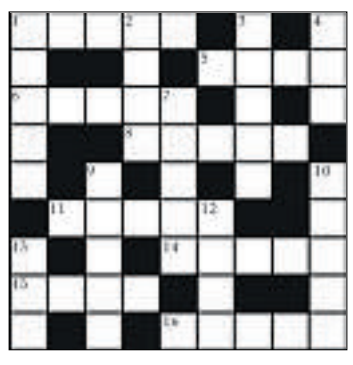

बाएं से दाएं
1. भाव का बोध कराने वाला; भाव प्रकट करने वाला; भाव बताने वाला (5)
5. अंदर का; आंतरिक; भीतरी; अति प्रिय; घनिष्ठ; निकटस्थ; पारिवारिक (4)
6. बिक्री पर लगने वाला कर; राजकीय बिक्री कर (3,2)
8. नस का बल खाना; अपने स्थान से नस इधर-उधर हो जाना; नस हटने के कारण पीड़ा व सूजन (2,3)
11. मनोहरता; सौंदर्य; खूबसूरती (5)
14. घटाना; निकालना (2,3)
15. अरोचक; एकविध; एक जैसे रस वाला; सदा एक सा रहने वाला; सदृश्य (4)
16. चिकनाहट; मुलायमियत (5)

ऊपर से नीचे
1. ईश्वर; प्रारब्ध लिखने वाला; भाग्य का विधान करने वाला; अदृष्ट नियंता (2,3)
2. दिल की धकधक; स्पंदन; हृदय का स्पंदन; हृदयस्पंदन (4)
3. झगड़ा होना; बात का झगड़े का रूप ले लेना; मामले का तूल पकड़ना; विवाद होना (2,3)
4. उगना; चिपकना; जुड़ना; सटना (3)
7. पारा; महादेव; शिव (5)
9. ख्याति प्राप्त करना; प्रसिद्धि पाना; काम पूरा करना; नाम मात्र को काम करना; दोष मढ़ना; किसी के नाम संपत्ति लिखना (2,3)
10. अपनत्व; आत्माभिमान; आत्मीयता; स्वजन भावना (5)
12. तमोगुण वाला; तमोगुण का कार्य (4)
13. बैठने की विधि; स्थिति; बैठने की वस्तु; बैठक (3)

प्रस्तुति : विविधा विधा, दिल्ली

उत्तर अगले अंक में

वर्ग पहेली 2948 का उत्तर